Prof. Shashi Sharma, Principal
Professor, Department of Political Science
e-mail: prof.shashisharma@gmail.com

Political Sociology, PAPER VII

Course Content-12: 'Relationship between Politics and Society in India'

भारतीय राजनीति एवं नातेदारी(Kinship and Indian Politics)

रक्त संबंध यानी कि नातेदारी भारतीय सामाजिक संरचना का मुख्य आधार.माध्यम है। नातेदारी का अभिप्राय व्यक्तियों के मध्य संबंधों की उस व्यवस्था से है जो प्रजनन एवं वास्तविक वंशावली के आधार पर परस्पर संबंधित होते हैं। विवाह तथा रक्त संबंधों के आधार पर परस्पर संबंधित लोग नातेदारी व्यवस्था का निर्माण करते हैं। रक्त संबंधों के आधार पर संबंधित व्यक्तियों का समूह नातेदारी का आन्तरिक पहलू है, जबकि वैवाहिक संबंधों के आधार पर निर्मित व्यवस्था नातेदारी का बाध्य पक्ष है।

जहां तक नातेदारी और भारतीय राजनीति का संबंध है, यहां राजनीति में वंशवाद भाई–भतीजावाद की मानेवृत्ति से लगभग सभी राजनीतिक पार्टियां ग्रसित हैं। पार्टी अध्यक्ष पद से लेकर राजनीतिक सत्ता के गलियारे तक, प्रत्याशियों के चयन तथा चुनाव में उम्मीदवारी से लेकर मंत्रिमंडल के निर्माण तक हर क्षेत्र की राजनीतिक भर्ती में जाति, कुटुम्ब, परिजनों की प्रमुख उपस्थिति स्पष्टतः देखी जा सकती है। यद्यपि परिवारवाद को पोषित करने का आरोप हमेशा कांग्रेस पार्टी पर लगाया जाता है, लेकिन समसामयिक परिप्रेक्ष्य में वस्तुस्थिति यह है कि आज देश की कोई भी राष्ट्रीय या क्षेत्रीय पार्टी इस मानसिकता से अछूती नहीं है।

भारतीय राजनीति में परिवारवाद की भूमिका (Role of Familyism in Indian Politics)

राजनीतिक समाजीकरण प्रक्रिया पर किये गये शोधकार्यों का तात्त्विक निष्कर्ष यह है कि एक नागरिक के राजनीतिक समाजीकरण में परिवार का योगदान सर्वप्रमुख होता है। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय राजनीति का तथ्यान्वेषण करने से इस तथ्य का स्पष्टीकरण होता है कि समयानुरूप देश में मौजूद राजनीतिक परिवारों पर राजनीतिक समाजीकरण की इस प्रवृत्ति का गहरा प्रभाव पड़ा है। राजनीति और नातेदारी के बीच परस्पर संबंध का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इस परम्परा की वजह से नेतृत्व परिवर्तन का मार्ग काफी सरल हो जाता है। शीर्ष नेतृत्व परिवर्तन के नाम पर पार्टीजनों के बीच कोई विशेष राजनीतिक दाँव–पेंच या खींचतान नहीं होती है और अधिकांश पार्टी जनों द्वारा परिवर्तित नेतृत्व को सहजता से स्वीकार भी कर लिया जाता है। उदाहरणार्थ, कांग्रेस पार्टी में पंडित नेहरू के निधन से खाली हुई गद्दी पर शास्त्री जी की छोटी अवधि के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी और श्रीमती गांधी की हत्या के बाद श्री राजीव गांधी को पार्टी अध्यक्ष तथा प्रधानमंत्री के पद पर आसीन होने में कोई कठिनाई नहीं हुई। आज भी कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष पद नेहरू गांधी परिवार के दायरे में सिमटा हुआ है।

क्षेत्रीय राजनीति में भी परिवारवाद के यथोचित उदाहरण से कई प्रान्तों की राजनीति सुशोभित हो रही है। उदाहरणार्थ बिहार की राजनीति में चारा घोटाला कांड के उजागर होने और लालू यादव की इसमे संलग्नता की ख़बरें आने के पश्चात् आनन–फानन में श्रीमती राबड़ी देवी को राजद के अध्यक्ष पद पर नामजद किया गया और राजद की मुखिया होने के नाते मुख्यमंत्री बिहार के रूप में श्रीमती राबड़ी देवी की ताजपोशी में कोई राजनीतिक कठिनाई नहीं आयी। वैसे भी राजद का अध्यक्ष पद लालू यादव की निजी सम्पत्ति है।इसी भांति लोजपा का अध्यक्षा पद रामविलास पासवान या उसके परिवार की निजी सम्पत्ति है। ज्यादातर क्षेत्रीय स्तर की राजनीतिक पार्टियों में ऐसे उदाहरणों की भरमार है।

भारतीय राजनीति में परिवारवाद या वंशवाद की प्रवृत्ति की मौजूदगी से जहां नये नेता के चुनाव में आसानी होती है, वहीं राजनीति को इसका ख़ामियाज़ा भी उठाना पड़ता है। वंशानुगत आधारित नेतृत्व में तानाशाही प्रवृत्ति का आविर्भाव होता है जो लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए सही नहीं है। वंशानुगत आधारित राजनीति के इस प्रसंग को कांग्रेस पार्टी के आलाकमान द्वारा

विगत चार दशकों से अपनायी जा रही कार्यशैली के संदर्भ में सहज ढंग से देखा जा सकता है। इस पार्टी में आलाकमान की सुदृढ़ राजनीतिक हैसियत की वजह से न केवल राष्ट्रीय राजनीति में, अपितु प्रान्तों की राजनीति में भीहस्तक्षेप किया जाता रहा है। जिस प्रान्त में पार्टी को सरकार बनाने का अवसर मिले, वहां के लिए मुख्यमंत्री के नाम का चयन करना, यदि जरूरत पड़ी तो मुख्यमंत्री के नाम में बदलाव करना, विभिन्न प्रान्तों में पार्टी अध्यक्ष नियुक्त करना, आदि पार्टी अध्यक्ष का विशेषाधिकार है और यही इस पार्टी की राजनीतिक संस्कृति बन चुकी है। इस वंशवाद, परिवारवाद की बढ़ती प्रवृत्ति की वजह से कांग्रेस के अन्दर विक्षुब्धों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है और शायद पार्टी की गिरती साख और खिसकते जनाधार की मूल वजह पार्टी की आन्तरिक राजनीतिक संस्कृति ही है।

राजनीति में वंशवाद, परिवारवाद आदि प्रसंग की चाहे जितनी आलोचनाएं की जायें, लेकिन आज लगभग सम्पूर्ण विश्व की राजनीति में परिवारवाद की प्रवृत्ति जोर पकड़ रही है। भारत में तो राजनीति और नातेदारी का संबंध प्रमुखता से राजनीतिक दलों की राजनीतिक संस्कृति का आधारतत्त्व बनता जा रहा है और दलों की आन्तरिक राजनीतिक संस्कृति के पोषक का स्वरूप धारण करके देश की सामान्य राजनीतिक संस्कृति को नयी दिशा प्रदान कर रहा है। कर्नाटक में एच.डी. देवेगौड़ा के बाद उनके पुत्र कुमार स्वामी, हरियाणा में देवीलाल के पुत्र चौधरी ओमप्रकाश चौटाला, उड़ीसा में बीजू पटनायक के पुत्र नवीन पटनायक जैसे कई उदाहरण भरे पड़े हैं, जहां राजनीतिक भर्ती में परिवार के लोगों को प्रमुखता दी जाती है।

भारतीय राजनीति में वंशवाद की गहरी मौजूदगी की बानगी के रूप में अक्टूबर, 2007 में कर्नाटक में घटित पुत्र–मोह व सत्ता–मोह से संबंधित एच.डी. देवेगौड़ा के राजनीतिक क्रियाकलापों को लिया जा सकता है। यों तो भारत की राजनीति से परम्परागत मूल्य, नैतिकता के सिद्धान्तों का लगातार क्षरण हो ही रहा है, मगर यहां कर्नाटक में पुत्र मोह और पुत्र को सत्तारूढ़ रखने की वजह से अवसरवाद और मूल्य विहीन राजनीतिक नाटक का जो परिदृश्य दिखाई दिया उसे कर्नाटक में 'लोकतंत्र के प्रहसन' (Irony) की संज्ञा दी जा सकती है। कर्नाटक में कुमार स्वामी को सत्ता में बनाये रखने के लिए श्री देवेगौड़ा की राजनीतिक बयानबाजी और क्रियाकलाप और पिता–पुत्र की राजनीतिक जुगलबंदी भारतीय राजनीति में पुत्र मोह की एक अनोखी मिसाल है।

इधर राहुल गांधी के रूप में पंडित नेहरू के परिवार की चौथी पीढ़ी राजनीति में सता संभालने के लिए तैयार की जा रहीं है। 'युवराज' के रूप में राहुल गांधी की ताजपोशी तो हो गयी है। राष्ट्रीय राजनीति में बड़ी भूमिका निभाने का संकेत भी वे दे चुके है। कांग्रेस में उनकी हैसियत और राजनीतिक साख पर पार्टीजनों के अन्दर कोई सवाल नहीं है। कांग्रेस पार्टी राहुल गांधी में अपना भविष्य देख रही है तो इसमें कोई अचरज नहीं होना चाहिए। कांग्रेस के चरित्र और स्वरूप में यह बदलाव हुए लगभग चार दशक बीत चुके हैं। व्यक्तिवाद, वंशवाद और परिवाद की वजह से कांग्रेस पार्टी की आलोचना करने वाले तमाम राजनीतिक दलों की मानसिकता में भी इस बीच काफी बदलाव आ चुका है। सभी दल इस बीमारी से गंभीर रूप सें ग्रसित हो चुके हैं। इसलिए लगभग सभी राजनीतिक दलों के लिए भारतीय राजनीति में अब परिवारवाद कोई मुद्दा नहीं रह गया है।

भारतीय राजनीति की नयी परम्परा नये मूल्यों के अनुरूप अब किसी पार्टी के विधायक या सांसद के आकस्मिक निधन होने के बाद होने वाले चुनाव में संबद्ध नेता के किसी निकटस्थ रिश्तेदार को खड़ा करने की परम्परा सभी दलों में पूरी तरह स्थापित हो चुकी है। यहां तक कि वामपंथी दल, जो अब तक भारतीय राजनीति की कई बुराइयों से बचे हुए थे, उनके द्वारा भी इस परम्परा को आगे बढ़ाने की होड़ में कदमताल करने का प्रयास आरंभ कर दिया गया है जिसकी महत्त्वपूर्ण बानगी के रूप में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सचिव प्रकाश करात की पत्नी वृंदा करात को पार्टी की पोलित ब्यूरो में शामिल करने के वाकिया को लिया जा सकता है। वामपंथियों के इतिहास में प्रमुख राजनीतिक पदों पर भर्ती हेतु परिवारवाद की दिशा में उठाया गया शायद यह पहला कदम है।

विशुद्ध रूप से व्यक्ति केन्द्रित दलों में परिवारवाद एक अपरिहार्य तत्त्व के रूप में अपनी जगह बना चुका है,। देश में व्यापक स्तर पर ऐसी राजनीतिक संस्कृति का विकास व प्रचार-प्रसार सहभागितामूलक लोकतंत्र के सफलीभूत होने की दृष्टि से राजनीति का चिन्तनीय पक्ष है। बहरहाल यह सत्य है कि किसी नेता द्वारा अपने बेटे–बेटी या पत्नी या किसी अन्य संबंधी को अपने दल का उत्तराधिकारी बना देने से ही वह जनलोकप्रिय या जननायक नहीं बन सकता है। वस्तुतः यदि सहानुभूति के पहलू को हटा दिया जाय तो इनके चुनाव जीतने की कोई गारन्टी भी नहीं होती है। मगर सिर्फ किसी राजनेता की संतान या पत्नी होने के आधार पर किसी भी पार्टी में कोई ओहदा मिलना या चुनाव में टिकट मिलना लोकतांत्रिक मूल्यों के ख़िलाफ़ है। राजनीतिक दलों का एक परिवार पर इतनी निर्भरता भारतीय लोकतंत्र में वंशवाद की बढ़ती बेल का द्योतक है। देश की राजनीति में स्थापित होती यह परम्परा बताती है कि हमने शासन–व्यवस्था के रूप में भले ही लोकतंत्र अपना लिया हो, मगर लोकतांत्रिक मूल्यों–मान्यताओं को हम आज भी आत्मसात् नहीं कर पाये हैं। इस परम्परा के शुरुआत का श्रेय भले ही कांग्रेस को है, लेकिन इस मुद्दे पर आज कोई भी पार्टी बेदाग छवि वाली नहीं रहीं। शायद यही वजह है कि अधिकांश पार्टियां आज जनता से लगातार कटती जा रही हैं और चुनाव में मतदान का प्रतिशत लगातार गिरता जा रहा है।

साराशंतः, यहा कहा जा सकता है कि सत्ता हासिल करने के लिए किसी भी हद तक जाने, किसी से भी हाथ मिलाने की जो प्रवृत्ति राजनीतिक दलों में उभर रहीं है इससे भारतीय लोकतंत्र एक राजनीतिक स्वाँग (Mockery) की शक्ल अख़्तियार करता जा रहा है और विडंबना यह है कि मतदाताओं के लिए इन्ही में से किसी एक को अपना प्रतिनिधि चुनने की विवशता है।